

## Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 20 अक्टूबर, 2023

### गोल्डन पीकाॅक अवार्ड से सम्मानति REC लमिटिड

वदियुत मंत्रालय के अधीन केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम महारत्न कंपनी **REC लमिटिड** (पूर्व ग्रामीण वदियुतीकरण नगिम लमिटिड) को प्रभावी संकट मूल्यांकन रणनीतियों को लागू करने की प्रतबिद्धता के लिये **जोखमि प्रबंधन में गोल्डन पीकाॅक पुरस्कार** प्राप्त हुआ है।

- वर्ष 1991 में **इंस्टीट्यूट ऑफ डायरेक्टर्स (IOD)**, भारत द्वारा स्थापति गोल्डन पीकाॅक अवार्ड्स, कॉर्पोरेट के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिये अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसति मानक के रूप में उभरा है।
  - IOD कॉर्पोरेट नदिशकों के पेशेवर वकिस और प्रभावी बोर्डों के गठन की आवश्यकता को पूरा करने के लिये **सोसायटी पंजीकरण अधिनियम XXI, 1860** के तहत भारत में नदिशकों का एक शीर्ष पेशेवर संघ है।
- REC लमिटिड एक **गैर-बैंकगि वतितीय कंपनी (NBFC)** है जो भारत में पावर सेक्टर फाइनेंसगि और वकिस पर केंद्रति है। यह वदियुत ऊर्जा क्षेत्र में वभिन्न संस्थाओं को वतितीय सहायता प्रदान करती है।
  - REC की फंडगि से भारत में हर चौथा बल्ब रोशन होता है।

और पढ़ें... [REC को महारत्न का दर्जा](#)

### लघु हमि युग आर्दर था

1671-1942 ई. के मध्य हुई एक वैश्विक जलवायु घटना, **लघु हमि युग (LIA)** का एक नया अध्ययन, जो उस युग में **वर्षा के प्रकार** में महत्वपूर्ण बदलाव प्रदर्शति करता है, इस **लघु हमि युग के दौरान कम मानसूनी वर्षा के साथ समान रूप से शीतल एवं शुष्क जलवायु** की पारंपरिक धारणा को चुनौती देता है।

- अध्ययन के लिये **दक्षिण-पश्चिमि गरीषमकालीन मानसून (SWM)** और **पूर्वोत्तर शीतकालीन मानसून (NEM)** दोनों से प्रभावति **पश्चिमि घाट** को चुना गया था।
- वैज्ञानिकों ने भारत के पश्चिमि घाट से **पराग-आधारति वश्लेषण** का उपयोग करके 1219-1942 ई. तक की शाक-गतिकी और जलवायु परिवर्तनशीलता का वश्लेषण कया।
  - पराग वश्लेषण में **पूर्व काल सदृश वातावरण के पुनर्निर्माण के लिये पराग (बीज-पोधे में नर बीजाणु) का प्रयोग कया जाता है।**
- अध्ययन में **पश्चिमि घाट में आर्दर LIA के रकिॉर्ड के संकेत मलि हैं, क्योंकि नमी की स्थिति LIA के दौरान बढ़ी हुई NEM के कारण हुई थी।**
  - अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से **आर्दर नम/अर्द्ध-सदाबहार और शुष्क उष्णकटबिधीय पर्णपाती वन** शामिल थे।
- अध्ययन से यह भी पता चलता है कि **अंतर-उष्णकटबिधीय अभसिरण क्षेत्र (ITCZ)** की गति, **सकारात्मक तापमान वसिंगतियों, सौर धर्बों की संख्या में वृद्धि** और उच्च सौर गतिविधिके कारण भी जलवायु परिवर्तन हो सकता है।

और पढ़ें... [पश्चिमि घाट](#)